ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम की वर्तमान प्रासंगिकता

अंजू सिंह, शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)
प्रोफेसर (डॉ) राम गोपाल शर्मा, शोध निर्देशक, राजकीय अध्ययन शिक्षण संस्थान, बीकानेर

शोध सारांश

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है इसके लक्ष्यों का निर्धारण देश, समाज एवं व्यक्ति को बुनियादी जरूरतो के अनुसार किया जाता है। जिस प्रकार देश, समाज एवं व्यक्ति की जरूरत में बदलाव आता रहता है, उसी तरह से शिक्षा में भी बदलाव आवश्यक हो जाता है। समय–समय पर शैक्षिक मूल्यों, पाठ्यक्रम, सीखने सिखाने व आंकलन की प्रक्रिया में गुणात्मक सुधार हेतु परिवर्तन किए जाते हैं।

वर्तमान परिवर्तन के दौर में शिक्षक की भूमिका में भी बदलाव आया है। बालक को शिक्षित करने का मूल दायित्व शिक्षक का है। अतः बालक व समाज के उचित विकास के लिए शिक्षक का योग्य व प्रशिक्षित होना बहुत आवश्यक है। जिस कारण से शिक्षक शिक्षा में मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की गई। इसीलिए एन.सी.टी.ई. द्वारा बी.एड. पाठ्यक्रम को द्विवर्षीय किया गया तथा द्विवर्षीय बी.एड पाठ्यक्रम में इंटर्नशिप कार्यक्रम को लागू किया गया है। जिसका उद्देश्य उचित शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करना एवं शिक्षकों की प्रभावशीलता एवं व्यक्तित्व को मजबूत बनाना तथा शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहार एवं शिक्षण कौशल को समय के अनुसार परिवर्तन करना था। बी.एड.प्रशिक्षणार्थियों के लिए इंटर्नशिप कार्यक्रम अत्यधिक प्रभावी एवं व्यावसायिक है इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। परंतु देखने में यह भी आता है कि इंटर्नशिप कार्यक्रम में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने के स्थान पर कागज पूर्ति ही की जाती है। विद्यालय प्रबंध द्वारा भी पूर्णतया सहयोग नहीं किया जाता है। इस कारण प्रशिक्षणार्थियों में जिन कौशलों एवं गुणों का विकास होना चाहिए वह नहीं हो पता है। अतः आवश्यकता है कि इंटर्नशिप कार्यक्रम को प्रभावी बनाने हेतु आवश्यक कदम उठाये जाने चाहिए।

शब्द कुंजी : बी.एड पाठ्यक्रम, स्कूल इंटर्नशिप, वर्तमान प्रासंगिकता।

प्रस्तावना

शिक्षा पद्धति की संपूर्ण प्रक्रिया शिक्षक, विद्यार्थी एवं पाठ्यक्रम के इर्द–गिर्द घूमती है। पाठ्यक्रम को विद्यार्थी तक पहुंचाना शिक्षक का कार्य है। पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को तभी पूर्ण किया जा सकता है, जबकि वह उचित प्रकार से विद्यार्थियों तक पहुंचे। यह कार्य एक अच्छा शिक्षक ही भली–भाँति कर सकता है जो अपने कार्य में दक्ष व पूर्ण कुशल हो। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या निर्माण (एन.सी.एफ.) 2005 में शिक्षक की एक मननशील पेशेवर के रूप में संकल्पना की गई। वर्तमान में 'अभ्यास–शिक्षण' के स्थान पर 'स्कूल इंटर्नशिप' का प्रयोग किया जा रहा है। स्कूल इंटर्नशिप में B.Ed प्रशिक्षणार्थी को विद्यालय में वे सभी अवसर प्रदान किए जाते हैं जिससे वह शिक्षण के सैद्धांतिक व व्यावहारिक पक्षों को स्वाभाविक प्रक्रिया के अंतर्गत सीख सके।

इन्टर्नशिप एक व्यावसायिक सीखने का अनुभव हैं जो एक छात्र को अपने व्यवसाय से संबंधित कौशल व व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करता है। यह प्रशिक्षणार्थिओं को अपने कार्यक्षेत्र में नए विचार और ऊर्जा लाने, प्रतिभा विकसित करने और भविष्य के सफल व्यवसायी बनने के तैयार करता हैं। इन्टर्नशिप व्यावसायिक गुणों को विकसित करने में मदद करती है। इससे इंटर्न अपने व्यवसाय में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार होता है। इन्टर्न या प्रशिक्षुता शब्द नवीन व्यवसाय या नौकरी करने वाले उन महाविद्यालयी, विश्वविद्यालयी छात्रों के लिए प्रयोग किया जाता है जो इस क्षेत्र में नये उतरे होते हैं। इन्टर्नशिप व्यावहारिक ज्ञान के साथ ही विषय की बारीकियों को समझने का अवसर प्रदान करता है। इस इन्टर्नशिप कार्यक्रम में छात्राध्यापको को शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त करने व अपने व्यवसाय के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए कई आयामो को शामिल किया गया है। इन्टर्नशिप कार्यक्रमद्वारा छात्राध्यापक विद्यालयी परिवेश में अपने प्रयोगात्मक कार्यों को पूर्ण करते हैं जिससे उनकी व्यावसायिक कुशलता व विभिन्न कौंशलों में वृद्धि होती है। इन्टर्नशिप के माध्यम से प्रशिक्षणार्थी वे सभी व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करते हैं जो उनको अपने व्यावसायिक क्षेत्र में सफल होने के लिए मार्ग प्रदान करते हैं। स्कूल इंटर्नशिप के अंतर्गत प्रशिक्षणार्थियों के अभिभावकों व सामुदायिक इकाईयों से संपर्क के अवसर प्रदान किए जाते हैं। जिससे वे शिक्षा व वर्तमान सामाजिक पटल के पारस्परिक संबंध का विश्लेषण कर सके।

शिक्षण–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में इंटर्नशिप कार्यक्रम की आवश्यकता

भारत में कामकाजी जनसंख्या का प्रतिशत काफी अधिक है इसको देखते हुए इस बढ़त का लाभ लेने के

लिए न केवल शिक्षा की गुणवत्ता का विकास करना जरूरी है इसे रोजगार से जोड़े रखना भी वर्तमान समय की आवश्यकता हैं। सतत् विकास के लक्ष्यों को प्राप्त के लिए भारत के विश्व–विद्यालयी छात्रों को रोजगार के पर्याप्त अवसर भी उपलब्ध कराना जरूरी हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में प्रमुख बाधा विद्यार्थियों का रोजगार योग्य नहीं होना हैं। इसके लिए कक्षा–कक्ष में क्या पढ़ाया जाता है व समाज की आवश्यकता क्या है इसको समझना बहुत जरूरी हैं। यह महसूस किया गया है कि हमारी शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में हमारी परंपरागत शिक्षा अपने उद्देश्यों को पूरा नहीं कर पा रही हैं। मानवीय संसाधनों को शिक्षित करना एवं उनका सर्वांगीण विकास कर व्यवसाय योग्य बनाना भी विद्यालय का कार्य हैं। विद्यालयों में विद्यार्थी शिक्षण विषय की स्पष्ट अवधारणा ग्रहण नहीं कर पाते हैं क्योंकि शिक्षकों की कक्षागत गतिविधियाँ सकारात्मक नहीं हैं। एन.सी.टी.ई. ने इसी कारण बी.एड. के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में शिक्षण कार्य में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए वास्तविक कार्य क्षेत्र में इन्टर्नशिप कार्यक्रम को विकसित करने के निर्देश जारी किए गए। जिससे कि गुणवतापूर्ण शिक्षक तैयार हो सके,जिनमे कार्य क्षेत्र का व्यवहारिक ज्ञान भी पूर्ण विकसित हो सके।

बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रथम वर्ष में 24 व द्वितीय वर्ष में 96 दिन इंटर्नशिप हेतु निर्धारित किए गये हैं। जिसके अनुसार वे विद्यालय की समस्त गतिविधियों एवं क्रियाकलापों में भागीदान बनकर वे सभी अनुभव प्राप्त करते हैं जो कि एक उत्तम शिक्षक बनने के लिए आवश्यक हैं।

बीएड द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य

वर्ष 2014 में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) द्वारा बीएड द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम को अनिवार्य किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भविष्य के अध्यापकों को विद्यालयीय वातावरण से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ना तथा उन्हें शिक्षण कार्य की व्यावहारिक समझ देना है। बीएड इंटर्नशिप के अंतर्गत शिक्षक अभ्यर्थियों को विद्यालय के वास्तविक परिवेश में विभिन्न प्रकार की शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्रदान किया जाता है, जिससे न केवल उनके शैक्षणिक कौशल का विकास होता है, अपितु वे एक उत्तरदायी एवं कुशल शिक्षक के रूप में स्वयं को तैयार कर पाते हैं। इस कार्यक्रम में बीएड प्रशिक्षु विद्यालय में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करते हैं तथा विभिन्न प्रकार की शिक्षण व मूल्यांकन प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी करते हैं। इससे उनमें शैक्षिक दक्षता, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता एवं समस्या समाधान कौशल का भी विकास होता है। स्कूल इंटर्नशिप के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैः

1. प्रशिक्षुओं द्वारा अर्जित सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहार में प्रयुक्त कराना तथा उनमें शिक्षण कौशल का विकास करना।
2. विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की मानसिकता को समझना और उनके साथ शिक्षक के रूप में प्रभावी संबंध स्थापित करना।
3. प्रशिक्षुओं को विद्यालयीन वातावरण तथा विद्यालयीय क्रियाकलापों के व्यावहारिक अनुभव से परिचित कराना।
4. प्रशिक्षुओं में उत्तरदायित्व एवं कर्तव्यों के प्रति सजगता का विकास करना।
5. शिक्षण क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली समस्याओं एवं चुनौतियों की पहचान कर उन्हें सुलझाने की क्षमता विकसित करना।
6. प्रशिक्षुओं को व्यावसायिक ज्ञान के साथ–साथ विषयवस्तु की गहराई से समझ विकसित करने के अवसर प्रदान करना।
7. प्रशिक्षुओं के संप्रेषण कौशल, समय प्रबंधन, तकनीकी दक्षता एवं समूह कार्य क्षमता का विकास करना।
8. शिक्षा में नवाचारों, प्ब्ज उपकरणों एवं सहशैक्षिक गतिविधियों के प्रयोग की समझ विकसित करना।
9. प्रशिक्षुओं को शिक्षण के विविध पक्षों जैसे पाठ योजना, मूल्यांकन, अनुशासन, अभिलेखन आदि से परिचित कराना।
10. प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षण में नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों का व्यवहारिक ज्ञान देना, जिससे वे एक संवेदनशील, उत्तरदायी व समर्पित शिक्षक के रूप में समाज में अपनी भूमिका निभा सकें।

स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षु न केवल एक शिक्षक की भूमिका को व्यवहार में अनुभव करते हैं, बल्कि वे अपनी वैयक्तिक, शैक्षिक एवं व्यावसायिक दक्षताओं को भी सशक्त बनाते हैं। यह कार्यक्रम शिक्षण व्यवसाय की गहराई को समझने, समस्याओं को पहचानने और नवाचारी तरीकों से समाधान ढूंढ़ने की दृष्टि से अत्यंत प्रभावी सिद्ध होता है।

स्कूल इंटर्नशिप की वर्तमान प्रासंगिकता

स्कूल इंटर्नशिप प्रशिक्षणार्थियों को वास्तविक वातावरण में सीखे गए कौशलों का उपयोग करने का मौका देती है। यह प्रशिक्षणार्थियों को स्वयं परखने का अवसर प्रदान करती है, भावी शिक्षकों को यथार्थवादी बनाती है। यह विद्यालय की कार्य प्रणाली के प्रति अंतदृष्टि विकसित करती है। विद्यालय प्रशिक्षणार्थियों के लिए एक प्रयोगशाला के रूप में होता है, जहां वे विभिन्न प्रयोगों द्वारा अपने सीखे गए शिक्षण कौशलों को परखते हैं। विद्यालय की संपूर्ण परिस्थिति का अवलोकन, विद्यालय अभिलेखों का अवलोकन तथा संधारण प्रशिक्षणार्थियों द्वारा किया जाता है। विद्यालय में प्रशिक्षणार्थियों व विद्यार्थियो में परस्पर संप्रेषण द्वारा आपसी समझ व सहयोग को बढ़ावा मिलता है। विभिन्न शैक्षिक व सह–शैक्षिक गतिविधियों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को अपने व्यक्तित्व विकास का अवसर प्राप्त होता है। इन सबके बावजूद स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम की अपनी सीमाएं है, इसको सैद्धांतिक रूप में लागू करने में विभिन्न चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। इंटर्नशिप कार्यक्रम को निर्धारित प्रारूप में संचालित करने में स्कूल चयन की समस्या, सीखे गये कौशलों का अनुप्रयोग करने की समस्या आदि का सामना करना पड़ता है। प्रशिक्षणार्थी स्वयं भी विद्यालय नियमित रूप से नहीं जाते, जिससे उन्हें व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता है। विद्यालय प्रशासन द्वारा भी पूर्णतया सहयोग नहीं किया जाता है, जिससे प्रशिक्षणार्थी स्वयं को उपेक्षित महसूस करते हैं। प्रशिक्षणार्थियों के अवलोकन हेतु संबंधित B.Ed महाविद्यालय के प्राचार्यो को विद्यालय नहीं भेजा जाता है। जिससे उचित मार्गदर्शन व मूल्यांकन नहीं हो पाता है। इस प्रकार विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ स्कूल इंटर्नशिप में देखने को मिलती है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक है कि इंटर्नशिप कार्यालय की मूल्यांकन प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाना होगा, सतत् एवं निरंतर मूल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाना जरूरी है। प्रशिक्षणार्थियों में अपने कार्य को प्रति गंभीरता व सजगता विकसित करनी होगी। जिससे उनमें कर्तव्य बोध की भावना विकसित हो सके। विद्यालय व प्रशिक्षणार्थियों को स्कूल इंटर्नशिप की मूल अवधारणा से परिचित करना व उनके मध्य संवाद प्रक्रिया को विकसित करना भी महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा निर्धारित अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम की रूपरेखा (2014) के अनुसार पाठ्यक्रम की विषय वस्तु , उसके संचालन और क्रियान्वयन में एकरूपता का होना अत्यंत आवश्यक है। पाठ्यक्रम के संचालन तथा क्रियान्वयन में प्रशासन के द्वारा सहयोग मिलने पर ही स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम की सफलता निर्भर करती है।

निष्कर्ष

बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में इंटर्नशिप की अवधारणा महत्वपूर्ण है। यह कार्यक्रम शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को वास्तविक कार्य क्षेत्र के अनुभव प्रदान करता है। यह कार्यक्रम बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को यह अवसर देता है कि वे अपनी शिक्षण योजना बनाकर उनका अभ्यास करें व विद्यार्थियों व शिक्षकों द्वारा प्राप्त पृष्ठपोषण के आधार पर अपने शिक्षण को और अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास करें। इस कार्यक्रम के द्वारा शिक्षण के विभिन्न पहलू को समझने व कौशलों का विकास तभी हो सकता है, जबकि इंटर्नशिप के अन्तर्गत आने वाली बाधाओं को दूर किया जाए। तभी इंटर्नशिप कार्यक्रम अपने निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- एन.सी.टी.ई. स्कूल इंटर्नशिप : फ्रेमवर्क एंड गाइडलाइन जनवरी (2016)
- गवर्नमेंट ऑफ इंडिया (1966), रिपोर्ट ऑफ द एजुकेशन कमिशन (1964–66), एजुकेशन एंड नेशनल डेवलपमेंट, एजुकेशन डिपार्टमेंट ,नई दिल्ली.
- अप्रेटिषिप/इंटर्नशिप युक्त डिग्री कार्यक्रम हेतु उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों के लिए यू.जी.सी. को दिशा निर्देश (2009)
- रितुबाला डॉ. सी.पी. पालीवाल – शिक्षक–शिक्षा में बी.ए.ड. प्रशिक्षणार्थियों के लिए संस्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रासंगिकता (प्रकाशक IJEM MASSS, ISSN 2581–9925 पेज 257–262)